शरीर और आत्मा के विकास की प्रक्रिया

ओशो के साथ यह प्रश्नोत्तर परिचर्चा एक गूढ़ वार्ता है, जिसमें पशु-योनियों से मनुष्य होने की विकास प्रक्रिया का सूक्ष्म विवेचन है

प्रश्न : बंदर से आदमी का विकास हुआ, यह तो समझ में आता है। लेकिन आप जो आत्मा के विकास की बात कहते हैं, वह जरा समझ में नहीं आती।

इसमें समझने की बात ही बहुत ज्यादा नहीं है। बंदर से आदमी की देह मिली है, यह भी आपको कैसे समझ में आता है? यह इसीलिए समझ में आता है कि पीछे डार्विन ने बहुत मेहनत की और यह समझाने की कोशिश की कि शरीर का जो विकास है, मनुष्य के पास जो शरीर है, वह शरीर बंदर के पास जो शरीर है उसकी ही आगे की कड़ी है। यह शरीर उससे ही विकसित होकर आया हुआ है। यह तो आधी बात हुई। अगर मनुष्य केवल शरीर है, तब तो बात खत्म हो गई। लेकिन मनुष्य अगर आत्मा भी है, जैसा कि है, तो आत्मा कैसी विकास-यात्रा से आ रही है?

अगर किसी भी मनुष्य के पिछले जन्मों की स्मृति को खोदा जाए, तो मनुष्य होने के पहले उसका जो जन्म होगा वह गाय का होगा। आत्मिक कड़ी! शरीर की कड़ी नहीं; शरीर की कड़ी तो बंदर से आई हुई है

प्रकृति में बहुत-बहुत तलों पर बहुत तरह का विकास चल रहा है। तो जैसे शरीर की कड़ी बंदर से जुड़ी हुई है, वैसे ही अगर हम आदमी के पुनर्जन्मों में जाने की कोशिश करें—जैसे अगर आपके पुनर्जन्मों में जाने की, पिछले जन्मों को जानने की कोशिश की जाए—तो यह बड़ा आश्चर्यजनक अनुभव है कि अगर दस-पांच लोगों को उनके पिछले जन्मों की स्मृति में ले जाया जाए, तो दस-पांच जन्म तो उनके मनुष्यों के मिलेंगे, लेकिन मनुष्यों के अतिरिक्त अगर पीछे कोई याददाश्त को घुमाया जाए, तो आखिरी कड़ी गाय की मिलेगी। यानी अगर आपको याद दिलाया जाए, तो हो सकता है आपके पिछले दस जन्म मनुष्य के ही रहे हों। लेकिन ग्यारहवां जन्म आपका गाय का मिल जाएगा। अगर किसी भी मनुष्य के पिछले जन्मों की स्मृति को खोदा जाए, तो मनुष्य होने के पहले उसका जो जन्म होगा वह गाय का होगा। आत्मिक कड़ी! शरीर की कड़ी नहीं; शरीर की कड़ी तो बंदर से आई हुई है। लेकिन आदमी होने के पहले पहले कोई आत्मा किस पशु योनि से गुजरती है, अगर इसकी खोज-बीन की जाए, तो आदमी होने के पहले मनुष्य की आत्मा गाय की योनि से गुजरती है। यह मेरा कहना है। और चूंकि इस संबंध में कोई बहुत बड़ा काम नहीं हुआ, जैसा कि डार्विन के लिहाज से शरीर के संबंध में हुआ है, तो इस पर काफी काम करने जैसी गुंजाइश है, कि अगर हम दस-पच्चीस लोगों को पिछले जन्मों में उतारने की कोशिश करें, तो जहां से उन्होंने मनुष्य की कड़ी शुरू की है, वह कड़ी गाय की कड़ी के बाद शुरू होती है। इसलिए गाय से एक आत्मिक निकटता है, वह जो मैंने कहा, गऊमाता का मेरा जो अर्थ हो सकता है।

बंदर से भी एक निकटता है, शारीरिक कड़ी की दृष्टि से। यानी इसका मतलब यह हुआ कि आदमी के पैदा होने के पहले, गाय की यात्रा से जो आत्मा विकसित हो रही थी वह, और बंदर की यात्रा से जो शरीर विकसित हो रहा था वह, मनुष्य होने के लिए इन दो चीजों का उपयोग किया गया—बंदर वाले शरीर का और गाय वाली आत्मा का।

प्रश्न : यह समझ में नहीं आता।

समझने की बात नहीं है बहुत न! वह तो प्रयोग करने की बात है बहुत। वह तो अगर पिछले जन्मों की स्मृति को जगाने की कोशिश करें, तो समझ में आने वाली बात है।

प्रश्न : आपने किया है प्रयोग?

हां, तभी कह रहा हूं, नहीं तो कैसे कहूंगा।

प्रश्न : आपने जो प्रयोग किया, वह बताएं, तो उससे शायद समझ में आए। उससे भी कुछ समझ में नहीं आएगा न! वह तो तुम्हारा ही प्रयोग तुम्हें कराया जाए तो समझ में आता है।

आत्मा के संबंध में जितनी बातें हैं, वे बिना प्रयोग के कोई भी समझ में आने वाली नहीं हैं। कहा जा सकता है कि यह है, ऐसा है, लेकिन उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता कहने से। वह तो किसी को भी उत्सुकता हो...तो जैसे मैं ध्यान के शिविर ले रहा हूं, धीरे-धीरे उत्सुकता जगाता हूं, कुछ लोगों में कि जिन लोगों को पिछले जन्म की स्मृति की यात्रा पर जाना हो, उनके अलग शिविर लेने का इंतजाम। थोड़े से पच्चीस लोग इक्कीस दिन के लिए मेरे पास आकर रहें, उनको पिछले जन्म की यात्रा में उतारने की कोशिश की जाए। इक्कीस के साथ मेहनत की जाए तो उसमें से पांच-सात लोग उतर जाएंगे। तो ही समझ में आ सकता है कि हमारी पिछली कड़ी कहां से जुड़ी हुई है। नहीं तो वह समझ में नहीं आता।

और कठिनाई तो यह है कि कोई प्रयोग करने के लिए, गहरे प्रयोग करने की तैयारी नहीं है किसी की। क्योंकि गहरे प्रयोग खतरनाक भी हैं। क्योंकि आपको अगर पिछले जन्मों की स्मृति आ जाए, तो आप फिर दुबारा वही आदमी कभी नहीं हो सकेंगे जो आप स्मृति के पहले थे। कभी नहीं हो सकेंगे! फिर असंभव है यह बात। यानी आपकी पूरी, टोटल पर्सनैलिटी फौरन बदल जाएगी। क्योंकि आप पाएंगे कि अगर अपनी पत्नी को बहुत प्रेम कर रहे हैं, तो आप पाएंगे कि ऐसी कई पत्नियों को बहुत बार प्रेम किया और कुछ अर्थ नहीं पाया। तो इसके बाद आप इस पत्नी को वही प्रेम नहीं कर सकते जो आप इसके पहले कर रहे थे। वह असंभव हो जाएगा, वह बात ही खतम हो गई। अगर अपने बेटे के लिए आप मरे जा रहे हैं कि इसको यह बनाऊं, इसको वह बनाऊं, और आपको अगर पांच जन्मों की स्मृति आ जाए कि आप ऐसे कई बेटों के साथ मेहनत कर चुके हैं, वह सब बेमानी साबित हुई, और आखिरी में मर गए, तो इस बेटे के साथ जो आपका पागलपन है वह एकदम क्षीण हो जाएगा।

बुद्ध और महावीर, दोनों ने अपने सभी साधकों को पिछले जन्मों में ले जाने का प्रयोग किया। अगर कोई बहुत गौर से समझे तो बुद्ध

बुद्ध और महावीर का जो सबसे बड़ा दान है वह अहिंसा वगैरह नहीं है। अहिंसा तो बहुत दिन से चलती थी। इन दोनों का जो सबसे बड़ा कीमती दान है, वह जाति-स्मरण है, वह विधि है जिसके द्वारा आदमी को उसका पिछला जन्म स्मरण दिलाया जा सके

और महावीर का जो सबसे बड़ा दान है वह अहिंसा वगैरह नहीं है। अहिंसा तो बहुत दिन से चलती थी। इन दोनों का जो सबसे बड़ा कीमती दान है, वह जाति-स्मरण है, वह विधि है जिसके द्वारा आदमी को उसका पिछला जन्म स्मरण दिलाया जा सके। और जो लाखों लोग भिक्षु और संन्यासी हो गए, वह शिक्षा से नहीं हो गए। वह जैसे ही उनको पिछले जन्म का स्मरण आया कि सब बातें बेकार हो गईं और उनको सिवाय संन्यास के कोई सार्थक बात न रही। लाखों आदमी एक साथ जो संन्यासी हुए, उसका यह कारण नहीं था कि महावीर ने समझा दिया कि

संन्यास से मोक्ष मिल जाएगा। उसका कुल कारण इतना था कि उनको स्मृति की याद दिला देने से उनको यह लगा कि यह सब तो हम बहुत बार कर चुके, इसमें तो कुछ सार नहीं है, इसमें कुछ भी सार नहीं है। यह चक्कर तो बहुत दफे घूम चुका, इसमें कोई भी अर्थ नहीं है। तब कुछ और करने की धारणा...।

तो वह तो मैं चाहता हूं। ये जो सारी बातें कहता भी हूं वे इसी खयाल से कहता हूं कि आप में कोई जिज्ञासा जगे लेकिन बौद्धिक जिज्ञासा से कुछ भी नहीं होगा। जिज्ञासा ऐसी जगनी चाहिए कि कुछ लोग प्रयोग करने के लिए राजी हों। और अब जल्दी ही मैं चाहता हूं कि ध्यान के शिविर भी हों तो अब इस तरह के सामान्य शिविर न हों। सभी लोग आ जाएं, ऐसा अब न हो। या फिर हम शिविरों को बांटें। सामान्य शिविर हो, कोई भी आ सके। फिर गहरा शिविर हो, जिसमें वही लोग आ सकें जो कि गहरे जाने की हिम्मत और पूरी शक्ति लगाने को तैयार हों।

तो मैं मानता हूं कि इक्कीस दिन में गहरा प्रयोग करने से आप बिलकुल दूसरे आदमी हो जाएं, आपकी सारी जिंदगी और हो जाए। जो आप सोचते थे वह चला जाए; जो आप जीते थे वह चला जाए, आपकी सारी जिंदगी और हो जाए। और दुबारा आप लौट कर कभी वही न हो सकें।

लेकिन बौद्धिक जिज्ञासा से तो कुछ हल होने वाला नहीं है बहुत। क्योंकि जो भी आप पूछेंगे, मैं कुछ और कहूंगा, उस पर और दस प्रश्न खड़े हो जाते हैं, और वह बात वहीं घूम कर रह जाती है। उससे कोई मतलब नहीं है।

प्रश्न : जाति-स्मरण की बात तो अतीत की हो गई।

जी, अतीत की ही, अतीत की ही। लेकिन अगर आपको यह खयाल आ जाए कि आप ने अतीत में क्या-क्या किया, कितने बार किया, तो आज जो आप कर रहे हैं उसको करने में बुनियादी फर्क पड़ जाएगा। अगर यह पता चल जाए कि मैंने कई दफा धन कमाया, कई दफा कमाया और कुछ भी नहीं पाया, तो आज धन कमाने की जो दौड़ हो, वह एकदम क्षीण हो जाएगी। उसमें से बल निकल जाएगा। फर्क बुनियादी पड़ जाएगा एकदम। अगर आपको यह पता चल जाए कि यह शरीर बहुत दफे मिला और हर बार नष्ट हो गया, तो अब इस शरीर के आसपास जीने का कोई मतलब नहीं हैं, यह फिर नष्ट हो जाएगा। तो मेरे जीने का केंद्र शरीर नहीं होना चाहिए, क्योंकि शरीर बहुत दफे मिलता है और मर जाता है, और कोई फर्क नहीं पड़ता। तो आपके जीने का केंद्र पहली दफा आत्मा हो जाएगी, शरीर नहीं रह जाएगा।

अतीत की ही है वह। लेकिन उसका स्मरण आपको यह साफ कर देगा कि जो आप कर रहे हैं, यह कोल्हू के बैल जैसा करना है, यानी बहुत दफे किया जा चुका है। सफल हो गए हैं तो भी कुछ नहीं पाया, असफल हो गए हैं तो भी कुछ नहीं गंवाया। अगर यह बात दिख जाए तो सफलता-असफलता का कोई मूल्य नहीं रह जाएगा। यानी हम फिर वही नहीं कर सकेंगे न!

एक पिछले जन्म में मैंने करोड़ रुपये इकट्ठे कर लिए, और फिर मर गया। इस जन्म में मैं फिर करोड़ रुपये इकट्ठे करने के लिए लगा हुआ हूं। तो मेरे सामने साफ हो जाएगा कि करोड़ इकट्ठे कर लूंगा, और फिर मर जाऊंगा। तो अब मुझे करोड़ इकट्ठे करने की दौड़ में जीवन गंवाना? या कुछ और कमाने का खयाल करना चाहिए?

और प्रकृति की यह तरकीब है कि आपके पिछले जन्म की स्मृतियां बिलकुल दबा कर रख देती है। और ठीक भी है, नहीं तो आप पागल हो जाएं। अगर अकारण स्मृति आपको रही आए, तो आप मुश्किल में पड़ जाएं। तो जो हिम्मत करके कोशिश करता है खोजने का उसको ही पता चलता है, नहीं तो नहीं पता चलता।

सारी स्मृतियां, जितने जन्म हुए हैं—और एक-एक आदमी के लाखों जन्म हुए हैं—वे सारी स्मृतियां कोई भी खो नहीं जाती हैं, वे सारी स्मृतियां आपके भीतर मौजूद हैं। गहरी परतों पर उनको खोजना पड़ेगा। और ऐसे तो सामान्यतः हम, आठ साल पहले आपने क्या किया, वह भी भूल गए हैं।

मैं एक लड़की पर बहुत दिन तक प्रयोग करता था, उसकी जाति-स्मरण के लिए। तो अगर मैं आपसे पूछूं कि उन्नीस सौ इक्यावन में एक जनवरी को आपने क्या किया? तो आप कुछ भी नहीं बता सकते। एक जनवरी हुई है, उन्नीस सौ इक्यावन भी हुआ है, वह आपको पता है। पिछले जन्म की बात नहीं, इसी जन्म की बात है। लेकिन एक जनवरी उन्नीस सौ इक्यावन को आपने सुबह से शाम तक क्या किया? वह कुछ भी स्मरण नहीं है। हुई भी एक जनवरी उन्नीस सौ इक्यावन या नहीं हुई, बराबर हो गई है। लेकिन अगर आपको सम्मोहित करके बेहोश किया जाए और याद दिलाया जाए, तो आपको एक जनवरी उन्नीस सौ

इक्यावन आप इस तरह रिपोर्ट करते हैं जैसे अभी आंख के सामने से गुजर रही हो। अभी रिपोर्ट कर देंगे आप पूरा—कि यह हुआ, सुबह उठा, यह हुआ, यह नाश्ता लिया था, यह पसंद नहीं आया, नमक ज्यादा था दाल में—पूरे दिन की आप रिपोर्ट कर देंगे। पर मुश्किल यह मुझे हुई कि उसको टैली कैसे किया जाए कि यह हुआ भी कि यह सिर्फ एक सपना है।

तो फिर मैंने नोट करना शुरू किया कि जैसे आज दिन भर मैं सुबह से शाम तक उसको नोट करता रहा कि क्या हो रहा है—उसने किसको गाली दी, किससे झगड़ा किया, किस पर क्रोध किया—तो दिन भर के दस-पंद्रह मैंने नोट कर लिए। तीन साल बाद उसको बेहोश किया और उस दिन के लिए पूछा, तो उसने बिलकुल ऐसा रिपोर्ट कर दिया कि जिसका कोई हिसाब नहीं था। जो बातें मैंने नोट की थीं वे तो रिपोर्ट हुईं ही, जो मैं नोट नहीं कर पाया था, क्योंकि दिन में तो हजार घटनाएं घट रही हैं, वे भी सब रिपोर्ट कर दीं।

तो इस जन्म की भी बहुत कामचलाऊ स्मृति हमारे पास रह जाती है, बाकी तो नीचे दब जाती है। इसमें भी जो दुखद स्मृतियां हैं वे एकदम से दबा दी जाती हैं, चित्त उनको दबा देता है; जो सुखद स्मृतियां हैं उनको ऊपर रख लेता है। और इसीलिए हमें पिछला बीता हुआ समय अच्छा मालूम पड़ता है।

बूढ़ा आदमी कहता है, बचपन बहुत अच्छा था। उसका और कोई कारण नहीं है, बचपन की जितनी दुखद स्मृतियां, थीं वे नीचे दबा देता है चित्त और जो सुखद थीं थोड़ी सी उनको ऊपर रख लेता है, उनको याद रख लेता है।

एक बूढ़ा आदमी कहता है कि जवानी बहुत मजे की थी। बस वह जवानी में जो सुखद थोड़ा सा घटा होगा वह ऊपर रख लिया है, बाकी सब उसने दबा दिया है। और अगर उसका पूरा चित्त खोला जा सके, तो वह हैरान रह जाएगा कि मुश्किल से, सौ घटनाएं घटती हैं जिसमें निन्यानबे दुख की होती हैं, एकाध कभी सुख की हलकी झलक की होती है। मगर चित्त ऐसा धोखा करता है। और अगर दो-चार जन्म खोले जा सकें, तब तो पूरी ही जिंदगी बदल जाती है। क्योंकि फिर आप और ही ढ़ग से सोचेंगे, कुछ और ही केंद्र बनाएंगे।

अतीत की ही हैं, लेकिन वे फर्क लाती हैं, एकदम फर्क लाती हैं।

—ओशो
जीवन रहस्य
प्रवचन नं. 07 से संकलित
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है।)

Subscribe Now

Log on www.oshoworld.com/usersubscribe/

OSHO WORLD
Online Magazine

On 1st of every month

News, Happenings, Osho in media, updates and much more....

www.oshoworld.com